प्रातः क्लास 20-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह तो बच्चे समझते हैं बाप भी है टीचर भी है सद्गुरु भी है। तो बाप बच्चों से पूछते हैं, यहां जब आते हो तो इन ल०ना० और सीढ़ी के चित्रको देखते हो? जब दोनों को देखा जाता है तो एम आबजेक्ट और सारा चक्र बुधि में आ जाता है। हम देवता बन रहे हैं, ऐसे सीढ़ी उतरते आये हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को मिलता रहता है। तुम हो स्टूडन्ट। एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। कोई भी आये उनको समझाओ यह एमआबजेक्ट है। इस पढ़ाई से यह देवी-देवता जाकर बनते हैं फिर 84 जन्मों की सीढ़ी उतरते हैं। फिर रिपीट करना है। कितना इजी है। बहुत इजी नालेज है। इतनी सहज है भी है फिर भी पढ़ते2 नापास क्यों हो पड़ते हैं। उस जिसमानी पढ़ाई से भी यह रूहानी पढ़ाई सहज है। एमआबजेक्ट और 84 जन्मों का चक्र सामने खड़ा है। यह दोनों चित्र दोनों विजीटिंग रूम में भी होनी चाहिए। सर्विस करने लिए तो सर्विस का हथियार भी होना चाहिए। सारा ज्ञान इसमें ही है। पुरुषार्थ भी हम ही करते हैं। सतोप्रधान बनने लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इसमें अन्तर्मुख हो विचार करना चाहिए, घूमने-फिरने जाते हो तो भी बुधि में यही होनी चाहिए। यह तो बाबा जानते हैं नम्बरवार हैं। कोई अच्छी रीत समझते भी हैं, तो जरूर वह पुरुषार्थ करते होंगे। समझते हैं यह अच्छा पढ़ते हैं, खुद न पढ़ते हैं तो अपन को ही घाटा डालते हैं। अपन को तो कुछ लायक बनाना चाहिए ना। तुम सब स्टुडन्ट हो, और हो भी बेहद के बाप के। यह भी पढ़ते हैं। इनको मोनिटर कहो, सम्भालने वाला कहो। है तो सारा अपनी पढ़ाई पर मदार। बाबा तो रोज2 समझाते रहते हैं। यह (ल०ना०) है पद। और यह (सीढ़ी) है 84 जन्मों का चक्र। यह पहले नम्बर का जन्म। यह लास्ट नम्बर का जन्म। तुम देवता तो बनते हो ना। अभी है रावण सम्प्रदाय। यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते हैं कि हम रावण सम्प्रदाय है। भल कहते हैं भी हैं भ्रष्टाचारी हैं रावण सम्प्रदाय है-परन्तु अपन को पतित रावण सम्प्रदाय समझते नहीं हैं। इसलिए ही बाबा ने प्रश्न लिखवाया है सितयुगी दैवीसम्प्रदाय हो या कलियुगी आसुरी सम्प्रदाय हो। रात दिन का फर्क है। परन्तु इन बातों को भी मनुष्य समझते नहीं हैं। अन्दर आने से ही सामने अपना एमआबजेक्ट और 84 की सीढ़ी सामने खड़ी है। रोज आकर कोई इनके सामने बैठे तो भी स्मृति आये। तुम्हारी बुधि में है बेहद का बाप हम आत्माओं को यह समझा रहे हैं। सारा 84 के चक्र का ज्ञान तुम्हारी बुधि में भरपूर है, तो कितना हर्षित रहना चाहिए। वह अवस्था क्यों नहीं रहती है। क्या बात है जो तुमको हर्षित रहने में रोड़ा डालती है। सीढ़ी का चित्र भी अभी जल्दी ही छप आ जायेगी। यह चित्र आदि जो बनवाते हैं उनकी बुधि में भी होगा कि हमारा यह पद है। और यह हमारा 84का चक्र है। गायन भी सहज राजयोग। सो तो बाबा रोज समझाते रहते हैं। बेहद के बाप के हम बच्चे हैं तो उन रोज हमको वर्सा जरूर मिलना चाहिए। बाप ने अभी समझाया है तुम ने 84 जन्मों को नहीं जानते हो। हम तुमको बताते हैं। बाप ने सारा राज़ बताया है। तो जरूर वह याद करना पड़े। और फिर मैनर्स भी अच्छी चाहिए। बात-चीत करने की फज़ीलत भी अच्छी चाहिए। चलन बहुत ही अच्छी चाहिए। चलते-फिरते काम काज़ करते बुधि में यह जरूर याद रहे कि हम बाप के पास पढ़ने आये हैं। यह ज्ञान सृष्टि के चक्र का ही साथ ले जाना है। पढ़ाई तो बहुत सहज है। स्टुडन्ट अगर पूरी रीत न पढ़ेंगे तो जरूर टीचर को ख़याल रहेगा अगर क्लास में बहुत डल बच्चे होंगे तो हमारा नाम बदनाम होगा। इजाफा नहीं मिलेगा। प्रेन्ट प्रेन्ट नहीं देंगी। यह भी स्कूल है ना। इसमें प्रेन्ट आदि की तो बात ही नहीं। फिर भी पुरुषार्थ तो कराया जाता है ना। चलन को सुधारो। दैवी-गुण धारण करो। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। सर्विस चाहिए। बाप तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही आये हैं। परन्तु बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते। श्रीमत कहे यहीं जाओ तो वहां जायेंगे नहीं। कहेंगे यहां गर्मी है, यहां ठंडी है। कुछ भी बाप की पहचान नहीं है। इन में कौन हमको कहते हैं यह भी समझते नहीं हैं। यह साधारण रथ ही बुधि में आता है। दो बाप बुधि में आता ही नहीं। ड्रे2 राजाओं का कितना सब को डर रहता है। उनके आगे जाने में ही थर थर हो जाते हैं।

वड़ी अयार्दी होती है। यहां तो बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज़ हूं। मुझ रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। कैसे2 बातें करते हैं। क्या2 करते हैं। भगवान क्या चीज़ होती है यह भी समझते नहीं। वन्डर है ना। बाप कहते हैं मैं इस साधारण तन में आकर अपना और रचना की आदि, मध्य, अन्त का परिचय देता हूं। इस 84 के चक्र का राज़ समझाता हूं। यह सीढ़ी कितनी क्लीयर है। बाप जानते हैं कितने पत्थर बुधि बन पड़े हैं। इसलिए उनको भ्रष्टाचारी पतित रावण राज्य कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं तुमको यह बनाता हूं। बनाया था। अब फिर बना रहा हूं। तुम पारस बुधि थे फिर ऐसे पत्थर बुधि तुमको किसने बनाया। आधा कल्प रावण राज्य में गिरते आते हो। अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। विवेक भी कहते हैं बाप है ही सत्य। तो जरूर बाप सत्य ही बतावेंगे ना। यह भी पढ़ते हैं, तुम भी पढ़ते हो। कृष्ण कहते हैं मैं भी स्टुडन्ट हूं। पढ़ाई पर अटेन्शन देता हूं। एक्युरेट कर्मातीत अवस्था तो अभी कोई की भी बन नहीं सकती। मूल कितना भी पुरुषार्थ करे परन्तु ड्रामा करने न देगी। ऐसा कौन होगा जो इतना उंच पद पाने लिए20 नाखूनों का जोर न देगा। कहेंगे ऐसा पद तो जरूर पाना चाहिए। बाप के हम बच्चे हैं तो जरूर मालिक होने चाहिए। बाकी पढ़ाई में सौ लाचारी होती है। अभी तुमको ज्ञान का सरकदम अन्त मिला है। शुरू में तो पुराना ही ज्ञान था। अहम ब्रह्मोअस्मि। उल्टा सुल्टा ज्ञान बुधि में था। धीरे2 समझते आये। अभी हम समझते हैं ज्ञान तो अभी ही हमको मिलता है। बाप भी कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्य बातें बताता हूं। फट से कोई जीवन मुक्ति नहीं पा सकते। सारा ज्ञान उठाये नहीं सकते हैं। पहले यह सीढ़ी का चित्र थोड़े ही था। अभी समझते हैं यह तो वरोवर है हम ऐसे 84 जन्म लेते हैं चक्र लगाते रहते हैं। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। बाबा ने हम आत्माओं को सारा चक्र समझाया है। पहले ख्याल किया सीढ़ी को चक्र में लावें परन्तु सीढ़ी कैसे चक्र में आवेगी। इनमें तो सिर्फ भारत वासी ही दिखाई है। चक्र में और धर्म वाले भी हैं। वह सभी पीछे2 आते रहते हैं। उसमें हमारा क्या जाता। बाप कहते हैं तुम्हारा धर्म बहुत ही सुख देने वाला है। बाप ही आकर हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। औरों का सुख का टाईम तो अभी आया है। जब कि मौत सामने खड़ी है। यह एरोपलेन, बिजिलियां, टैक्स आदि आगे थोड़े ही थे। उन्हों के लिए तो अभी जैसे कि स्वर्ग है कितने बड़े2 महल आदि बनाते हैं। समझते हैं हमको तो सब सुख है। लन्दन में कितना जल्दी पहुंच जाते हैं। स्वर्ग समझते हैं। अब उन्हों को जब कोई समझावे स्वर्ग तो सतयुग को ही कहा जाता है। कलियुग को थोड़े ही स्वर्ग कहेंगे। नर्क में शरीर छोड़ा पुनर्जन्म भी नर्क में ही लेंगे ना। आगे तुम भी यह समझते नहीं थे। अब समझते हो आगे तो ब्लाईन्ड के औलाद ब्लाईन्ड ही थे। ब्लाईन्ड रावण को कहा जाता है। रावण जब आता है तो हम गिरने लग जाते हैं। सब विकार आ जाते हैं। तुमको अभी सारा ज्ञान मिलता है। तो चलन आदि कितनी क्लीयर की होनी चाहिए। अभी तुम सतयुग से भी जास्ती वन्डरफुल हैल्थ्फुल हो। बाप जो ज्ञान का सागर है सारा ज्ञान अभी देते हैं। और कोई भी मनुष्य भक्ति और ज्ञान को अलग न करके मिक्स कर दिया है। समझते शास्त्र पढ़ना यह ज्ञान है। और पूजा करना भक्ति है। तो अभी बाप गुल2 बनाने कितनी मेहनत करते हैं। को भी तरस आना चाहिए हम बाप को बुलाते हैं हम पतितों को आकर पावन फूल बनाओ। अभी बाबा आ गये हैं तो अपने पर भी रहम करना चाहिए क्या हम ऐसे फिर नहीं बन सकते हैं। नैलत डालनी चाहिए। अभी हम बाबा के दिल पर नहीं चढ़े हैं। अटेन्शन नहीं देते हैं। बाप कितना रहमदिल है। बाप को बुलाते हैं कि पतित दुनिया में आकर हमको पावन बनाओ। तो जैसे बाप को रहम पड़ता है वैसे बच्चों को भी रहम करना चाहिए। नहीं तो सद्गुरु के निन्दक ठौर न पायें। यह तो किसको स्वप्न में भी याद नहीं होगा कि सद्गुरु कौन है। वह लोग गुरुओं के लिए समझ लेते हैं कि कहीं गुरु सराप न दे देवे। अकृपा न हो जाये। बच्चा जो हुआ समझें यह गुरु की कृपा हुई। अल्प काल सुख को मानते हैं। यहां तो यह है आधा कल्प का सुख

की बात। तो बाप कहते हैं बच्चे अपने पर रहम करो। देही अभिमानी बनो तो धारणा भी होगी। सब कुछ आत्मा ही करती है। मैं भी आत्मा को ही पढ़ाता हूं। अपने को आत्मा पक्का समझो। बाप को याद करना है।

बाप को प्यार ही न करेंगे, याद ही न करेंगे तो विकर्म कैसे विनाश होंगे। भक्ति मार्ग में भी याद तो करते हैं ना। वे भगवान तुम रहमदिल हो। लिबरेटर हो, हमको गाईड करो। यह भी गुप्त है उनकी महिमा है। बाप आकर सब बतलाते हैं। भक्ति मार्ग में तुम याद करते हो, मैं आऊंगा तो जरूर अपने ही समय पर। मुझे वह पावर नहीं है जब चाहूं तब आऊं नहीं। ड्रामा में जब नूंध है तब ही आता हूं। बाकी ऐसे ख्यालात भी कब नहीं आती है। तुमको पढ़ाने वाला वह बाप है। यह भी उन से पढ़ते हैं। वह तो कोई भी खता नहीं करते हैं। किसको रंज नहीं करते हैं। नम्बर वन टीचर है। वह सच्चा बाप तुमको सच्च ही सिखलाते हैं। सच्च के बच्चे भी सच्चे। फिर झूठे के बच्चे बनने से आधा कल्प झूठे बन पड़ते हो। सच्चे बाप को ही भूल जाते हो। बाप कितना क्लीयर समझाते हैं। पहले2 तुम यह बताओ यह सतयुगी नई दुनिया है या कलियुगी पुरानी दुनिया है? तो मनुष्य कहते कि यह प्रश्न तो बहुत अच्छा पूछती है। यह तो आसुरी राज्य है। आसुरी राज्य में मनुष्य का क्या हाल होगा। आसुरी बुद्धि है। 5 विकार हैं। वहां 5 विकार होते नहीं। यह है तो बहुत सहज समझने की बात।

परन्तु जो खुद ही नहीं समझते हैं तो प्रदर्शनी में क्या समझावेंगे। सर्विस के बदला और ही छिप सर्विस करावेंगे। बाहर में जाकर सर्विस करना कोई मासी का घर नहीं है। बड़ी समझ चाहिए। बाहर के चलन से समझ सकते हैं। और ही तंग कर देते हैं। बाप तो बाप है, बीच में तंग तो हम लोग होते हैं। खिट2 साकारी साथ होती है। बाप तो कह देते यह भी ड्रामा में था। कोई भी आते हैं तो ब्रह्माकुमारी को समझाना ठीक है। नाम भी ब्रह्माकुमारियों का है ना। नाम बाला भी ब्रह्माकुमारियों को ही होना है।

यह है आग की दुनिया। सभी 5 विकारों में जले हुये हैं। उन्हों को जाकर समझाना कितनी डिफीकल्टी होती है। कुछ भी समझते नहीं। बाबा खुद भी देख रहे हैं। सिर्फ इतना कहेंगे ज्ञान तो बहुत अच्छा है। खुद समझते कुछ भी नहीं हैं। विघ्न पछाड़ी विघ्न तो पड़ते हैं ना। यह तो बाप ही जानते हैं। बहुत कड़े2 विघ्न आते हैं। विघ्नों के लिए फिर युक्तियां रचनी पड़ती हैं। यह करो, सम्भाल रखो, पुलिस का पहरा रखो। चित्रों को ईनष्यारे करा दो। पुलिस के पहरे से भी क्या होता है। टेर स्टुडन्ट, टेर पुलिस आपस में ही लड़ पड़ते हैं। यह क्या जाने तुम लोग कौन हो। यह यज्ञ है ना। तो विघ्न पड़ेंगे ही। सारी पुरानी दुनिया इसमें स्वाहा होनी है। नहीं तो सब नाम क्यों पड़े। यज्ञ में स्वाहा होते हैं ना। इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होती है। इसलिए यज्ञ नाम पड़ा है। ज्ञान को तो पढ़ाई कहा जाता है। यह पाठशाला भी है। तो यज्ञ भी है। पाठशाला में पढ़ कर तुम देवता बनते हो। फिर यह सब यज्ञ में स्वाहा हो जाते हैं। समझाने का भी खिर चाहिए ना। समझा वह सकेंगे जिनकी रोजाना की प्रैक्टीस होगी। प्रैक्टीस ही नहीं तो वह क्या बात कर सकेंगे। ज्ञान का भी मठास चाहिए ना। बाप समझ सकते हैं फलाने यह कर सकते हैं या नहीं। दुनिया के मनुष्यों लिए स्वर्ग अभी है अल्प काल के लिए। तुम्हारे लिए स्वर्ग आधा कल्प लिये होगा। विचार किया जाता है तो बड़ा ही बण्डर लगता है। अभी रावण राज्य खत्म हो रामराज्य स्थापन होता है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। झूठी बातें कितनी बैठ बनाई है। कुछ भी समझ नहीं सकते हैं। ड्रामा में मैं भक्ति और ज्ञान की नूंध है। यह सीढ़ी देख बड़ा बण्डर खाते हैं। बाप ने क्या2 समझाया है। यह भी बाप से सीखा है जो समझाते रहते हैं। जो बहुतों का कल्याण करते हैं उनको जरूर फल मिलेगा। पढ़े आगे अनपढ़े जरूर मरी होवेंगे। बाप रोज2 बच्चों को समझाते हैं। अपना कल्याण करो। यह तो चित्रों को सामने देखने से ही नशा चढ़ जाता है। इसलिए बाबा अपने कमरे भी चित्र रख दिये हैं। रूमअजेक्ट कितनी सहज है। इसलिए मैनर्स, कैरेक्टरस अच्छी बनाओ। दिल साफ तब मुराद हासिल हो सकते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुड०